Sanskrit: Study Material for B.A. Part 2.

Paper - 03

: Savitri Singh,
ept. of Sanskrit,

Date: 10-07-2020

ic शुकनासोपदेश के आधार पर राजाओं के चरित्र का वर्णन

बाणभट्ट कृत कादम्बरी नामक प्रख्यात कथा के महत्वपूर्ण अंश शुकनासोपदेश में महामंत्री शुकनास द्वारा राजकुमार चन्द्रापीड जिसके राज्याभिषेक की तैयारी प्रारम्भ हो चुकी है राजाओं के चरित्र अथवा उनके चरित्र और व्यक्तित्व में राजकाज चालन प्रक्रिया के अनन्तर आने वाले दोषों का वर्णन अत्यन्त मनमोहक एवं सरल उदाहरणों द्वारा किया गया है।

तथाहि:

अभिषेकसमय एवैषां मंगलकलशजलैरिव प्रक्षाल्यते दाक्षिण्यम्, अग्निकार्यधूमेनेव मलिनीक्रियते हृदयम्, पुरोहितकुशाग्रसम्मार्जनीभिरिवापनीयते क्षान्तिः, उष्णीषपट्टबन्धेनेवाच्छाद्यते जरागमनस्मरणम्, आतपत्रमण्डलेनेवापवार्यते परलोकदर्शनम्, चामरपवनैरिवापह्रियते सत्यवादिता, वेत्रदण्डैरिवोत्सार्यन्ते गुणा, जयशब्दकलकलैरिव तिरस्क्रियन्ते साधुवादाः, ध्वजपटपल्लवैरिव परामृश्यते यशः।

अर्थात् राजतिलक के समय ही जो मंगलकलशों के जल से अभिषेक किया जाता है मानों राजाओं की सम्पूर्ण उदारता को धो दी जाती है। अभिषेक के समय किये जाने वाले हवनकार्य के धुयें से मानों राजाओं का हृदय मलिन कर दिया जाता है। पुरोहित के कुशों के अग्रभाग से बनाई गई सम्मार्जनी से मानो क्षमा को बुहार दिया जाता है। युवराज के सिर पर साफा बाँधने की प्रक्रिया द्वारा लोकान्तर को देखने की प्रक्रिया को जरा आगमन की याद को मानो ढक दिया जाता है। चामर की हवा से सत्य बोलने की आदत को मानो दूर कर दिया जाता है। बेंत की छड़ी से मानों उनके दान आदि गुणों को हटा दिया जाता है। ध्वजपट रूपी पल्लवों से यश और कीर्ति को मानो पोंछ दिया जाता है।

राजाओं की व्याकुल - आकुल मनः स्थिति का वर्णन करते हुए मंत्री शुकनास कहता है कि "जिस प्रकार बहुत ऊँचाई अथवा दूर तक उड़ान भरने के कारण परिश्रम से शिथिल पक्षी के तेज चलते गलफड़ के चंचल होते हैं वैसे ही अन्य राजाओं का मन भी चंचल होता है। उस सम्पत्ति से लालच में आ जाते हैं जो जुगनू की चमक के समान क्षणभर को अपनी मनोहर चमक दिखाती है और जो विद्वानों के द्वारा गर्हित होती है। थोड़ा धन पाकर भी इतना गर्वित होते हैं कि अपने जन्म को भी भूल जाते हैं।

अनेकानेक विषय भोगों की लालसाओं के कारण मात्र पाँच होती हुई भी अनेक सहस्र संख्याओं वाली इन्द्रियों से सदा प्रयत्न में लगे रहने वाले, स्वाभाविक चञ्चलता के अवसर पाए हुए, अकेले होते हुए भी हजारों मालूम पड़ने वाले मन से व्याकुल बनाये गये क्षुद्र राजा मानसिक विह्वलता को प्राप्त होते हैं।

" केचित् श्रमवशशिथिलशकुनिगलपुटचपलाभिः खद्योतोन्मेषमुहूर्तमनोहराभिर्मनस्विजनगर्हिताभिः . . . . विह्वलतामुपयान्ति। "

10.7.2020

क्रमशः